भोटेदेशी विभिन्न बीज़ सम्राटों की
उपाधि

-Dr. Chowang Acharye

समावेश

परस्थथेरमुख महापुरुष गुरु पद्मा सम्राट, दसी शिष्यों में स्थित पुजार, बोधिसत्त्व, आर्य शावक एवं प्रत्येक बुद्ध आदि पूजन गणों के चरणों में अपनी श्रद्धा सुमन अविल रूप से सम्राट। भोटेदेशी विभिन्न सम्राटों की उपाधियाँ एवं निधियाँ (पूर्वाधिकारिता) प्रमाण के मान्य सिद्धांतों के सम्बन्ध में संशोधन विचार प्रस्तुत करने जा रहा हूँ।

सामान्यतः भोटेदेशी देश यानी भोटेदेशी विभिन्न सम्राटों के विकास कम को दो प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. बाह्य ऐतिहासिक दृष्टि और, 2. सिद्धांत के आधार पर।

1 वीशपुर्वी हिंदी सत्ताओं (129 स.स.) में भोटेदेशी प्रथम राजा न-चन प्रथमों के राज्यकाल का प्रारंभ हुआ। तत्परतानुसार वीशापुर्वी विश्वविद्यालय में बोधिसत्त्व समर्थकों के विनिवेशित कार्य भोटेदेशी राजवंश के नवनिवेश राजा लक्ष्मण-दीप-चन-न-चन-बुद्ध के राज्यकाल में उनके महत्त्व की दृष्टि पर नन्द-पो-सह-वा (जिसमें दो पोशी एवं एक सुपरलविशाल था) अवस्थित हुए। राजा द्वारा उन वस्तुओं की पूजा अर्थात आदि कार्य से भोट देश में बुद्धासासन का प्रारंभ होता है।

तत्कालीनत्तुष्टी-सत्ताओं शताब्दी में भोटेदेशी राजवंश के 33वें राजा, वर्मराज शोध-चन-नन्द-पो जिन्हें
आयातवलोकितेश्वर का निमान तत्त्व माना जाता है, के काल में सबोट द्वारा भीति सिर्फ निमान ग्राम्मय किया गया और माण-कर्तुम नामक स्वर को सर्वप्रथम उसी सिर्फ में लिखा गया। सबर राजा ने पदश्रोत रूप ने प्रचलित जातिक योगियों को गुहाया तन्त्रों का उपयोग किया। इस तरह उस काल में कुछ शासन के विकास का प्रारम्भ आंशिक रूप से हुआ।

तत्त्वज्ञात आदिदी हाथ में भूटरक संज्ञोपक के निमान काल आदित्यसंग राजा धर्मराज ठिक-बोड़-बन के काल में स्वतन्त्र ग्राम्मयक महाराज विहार को गाण्डकी, जलवीप में जलीपक मंजिल बसे बस्ती बस्ती, सौदेधेन नामक रूपाधारी योगेश्वर आचार्य पदया सम्पन्न और पाठ ती ही प्रविष्टों के विरोधमुष्य महाराजित विमलन आदि सिध्द एवं प्रविष्टों को हिस्टरिक से आमलित कर “सम-बे” नामक महाबिहार निमान किया गया। यहाँ भी अनुबादक तो-बा-बा वेदोच एवं का-वा-पल-बेगा आदि एक सी आठ दस तथा एक हजार की दस्तावेज साधारण एकृतिक हुए। नित तोमर ने आचार्यें के साथ गये प्रमाण-प्रमाण एवं गुहाया मर्मय आदि सूत्र-सन्दर्ख एवं उनसे समानित अनेक ग्राम्यों का भी प्राचीन अनुवाद प्रस्तुत किया गया।

इतना ही नहीं, हन ग्राम्यों को भाषण-विविद एवं भाषण आदि के काल में प्रतिपादित किया गया, विशेषत: महाभारत बलरामाधिन आदि परिश्रम के रूप में अथि रूपाधारियों को प्रकटित किया, एवं गुप्त पक्ष के वर्तमान, आचार्य स्थान तथा भाषण इन सभी विषयों की विवरण में ही है।

आचार्य पद्मसम्मथु द्वारा संज्ञानमय अथ नामक महाराजों को उद्वीपण किये जाने पर भोज देश में उनके प्राधिकार सिद्ध 
"जे-बैड़-बेन-बिया" आदि एकास सिद्ध निधि पाद प्राप्त तथा योगियों का प्राप्ति हुआ। इस प्रकार आचार्य ने बाल्य एवं आच्छादन
सभी प्रकार के गुण तन्त्रों का तथा विशेष रूप से "अतिरिक्त" 
नया का प्रचार किया। उसी प्रकार महाविद्वान विवेकचंद्र, महान 
लोचा-वा कौरोबन, प्रशिक्षित विख्यातित आदि लोगों ने अतिरिक्त 
के "दो-सुद-सम-सुम" अर्थात सुध, माया, जित आदि अनुसर 
तन्त्रों से सम्बन्धित शास्त्रों का न खेजल अनुवाद एवं सम्पादन ही 
किया अपितु पूर्ण रूप से अच्छी, आमम, अविश्वास आदि 
हृदय सुध एवं तन्त्र के शास्त्र को सुधृं के प्रकाश की भीति फैलाया 
भी।

नवी शताब्दी में गुणवत्ता पात्रों के विद्वंतित कार राजा इ- 
रग-उड़ि रल-पाचन ने भारत से आयन विलोकनील को आमन्त्रित 
कर चीन के विद्वान हुंड़ के कुर्दांन का निरक्रियण कराया, 
सच ही यह आदेश भी दिया कि अब से भोट देश में दर्शन सो 
बालाजीन ने और अध्याय उपाधिय शास्त्रशिल्प के मलाईमार 
ही कलेता। सुध, शास्त्र आदि जो उस समय तक अनुवाद हो चूके 
थे, उन्हें नई भाषा के आधार पर अनुवाद किया गया, जिज्ञासा 
अनुवाद वहले नहीं हुआ था, उन शास्त्रों को पूर्ण रूप से अविद्वित 
किया गया, और उन्हें ध्यान, मनन एवं भावना द्वारा धारण 
प्रतिपादित 
भी किया गया।

" घोस-वल-म-ओन-नम-सुम" अवधि धर्मराज "घोंड- 
चन-गम पो, घोंड-सौंह-चन" और घोंड-रलपा घन के समय 
भारत में जो बौद्ध भाषा मानवियों के लिस ने अवैधुण्ड रूप से 
विद्यामान था वहीं शास्त्र चप तो भोट देश में पहुँचा, उसी को 
पूर्व अनुवाद धारा निक-भा-पा कहा जाता है, भोट देश में 
अविश्वास रूप से अव तब जो धारण चलता आ रहा है, 
वह इन्हें महाकवियों के अविश्वास परिप्रेक्ष्य तथा लगन का पत 
है, वह हमें जानना चाहिए।
उसके बाद स्थानीय सदी के पर्वतीय शासन काल में “मर-पा चोर-चा वा” ने आयोजित के विधान श्री नड-पा से “नरो छोरस-डुग” आदि नड-पा परम्परा के छह धर्मों सहित सून, तन्त्र धर्मों का भी संबंध दिया और पारंपरिक अभ्यास भी किया। संस्कृत में “गृह-पा-धम-सुम” अथवा मर-पा-मलार नड-पा, चोर-चा वा, की परम्परा वाले बुद्धवासन को “चोर-चा वा नड-पा” कहा जाता है।

बारहवीं सदी के पर्वत में स्थित अन्य जगह के नवीनतम मंडुलोक के विनिमय विषय परिणाम “कुल-ग-मल-सून” ने जगमध्य राजीव यशवंत श्री से उपसमाहित ग्रहण की। इस प्रकार “स-छन-गोड-म-डू” से क्रमशः जले आ रहे बुद्धवासन का साध्य पा कहा जाता है।

उसके बाद सौधनी सदी के अगल में सुपहकर भी ज्ञान के विनिमय कार्य भट्टाचार्य “सो नड-डांग-पा” (सुमस्तति कीति) द्वारा प्रतिपादित स्वभाव बुधजनों के मार्ग की व्यवस्था तथा प्रासाद्यिक दास्तावेजों की आई स्थापना उत्पादित बुद्धवासन वाले तीन गुरु शिष्यों द्वारा क्रमशः विकसित बुद्धवासन को “धी-चोर-पा-धम-पा” अथवा गृह-पा-धम-पा कहा जाता है।

आयुर्विज्ञान भेद
सूत्र की इमर्टि से मात्रात्मिक वर्तन की व्याख्या का भेद, सूत्रों का नेयाद, नीतार्थ विभेदणम से एवं शास्त्रों की व्याख्या व्यवहार के आधार पर सम्बन्धित का भेद होता है। निंदमा-पा-चित्र में विश्वास का न होना, निंदमा का प्रयत्न है। इस प्रकार वर्तन एवं शून्यमान को प्रमुख आधार बनाकर, जिन सूत्रों में प्रमुख अंतिम प्रमुख रूप से परमार्थ सत्य होता है, उन्हें नीतार्थ कहा जाता है, क्योंकि उनमें अभिप्रयोग प्रयोजन एवं साधारण वाद्य
नहीं हुआ करती है। जिन सूत्रों में प्रमुख अभिधेय संतुलित स्थ
होता है, उनके नेयार्थ का जाना है, क्योंकि उनका अभिधारण आदि
-अलग से निव्यमान होता है। इस तरह कुछ के प्रथम वन्धन को
स्थान आदि संतुलित के प्रमुख अभिधेय होने से नेयार्थक ही माना
जाता है, हितीय प्रथम को आभास श्रृङ्ग सत्यों की सभी प्रकृतियों
से निव्यमान शून्यता प्राप्त अभिधेय होने से नीतार्थक ही माना
जाता है। अन्तर्गम (पश्चिम) प्रथम में विस्तृति एवं आभासमान
संबंध के रूप में विस्तृतिएवं आभास की समानता बनाने तथापि
के प्रत्यापादि दस्तुरों को भी नीतार्थ ही माना जाता है। संकेत
में, संधि-प्रथम-संबंधित शून्यता के अंतर्ग्यम भुक्तिझोर एवं
पश्चिम वन्धन में प्रभास-उत्पाति अवस्था का प्रतिपादन होने से
वास्तव में दोनों वन्धनों में प्रभास-एवं शून्यता दोनों का समानत
अन्तर्गम का निव्यमान होने से दोनों वन्धन नीतार्थ ही माने
गये हैं।

का-युद्ध परम्परा के अनुसार प्रभास-अंश को ही प्रभास 
शानकर प्रथम वन्धन को नेयार्थ एवं मध्य वन्धन को नेयार्थ नीतार्थ 
दोनों का सम्मिश्रण और पश्चिम वन्धन को नीतार्थ मात्र माना 
जाता है।

श्री साक्ष्य-पा- "शून्यता विषय तो नीतार्थ ही जानना 
चाहिए"। इस वन्धन के अनुसार प्रथम वन्धन नेयार्थ, मध्य 
नीतार्थ और पश्चिम वन्धन को केवल नेयार्थ ही मानते हैं।

गाड़न-पा-वन से कुछमान प्रथम वन्धन को नेयार्थ नीतार्थ 
का सम्मिश्रण मध्य वन्धन को मात्र नीतार्थ एवं पश्चिम वन्धन को 
मात्र नेयार्थ मानते हैं।
रुसरा शास्त्रों की बायाँ विधि की दृष्टि से मध्य बनन की बायाँ "अभिसमयवालकर" को साक्षर विद्वान द्वार-स्तोन तथा का-युद के कर्म-स्त्रिय-क्षाय दोमें आधि प्रासंगिक माध्यमिक प्रथमान का शाल्ल मानते है। जे ढोंढ खा-पा एवं डू-स्तोन आधि इसे स्वतन्त्र विद्वानिक माध्यमिक शाल्ल मानते है। इ-युरु निज-मा-पा सतालि एवं प्रासंगिक माध्यमिक दोमें का साधारण बन्ध मानते है, क्योंकि यह ग्रंथ मालुका मध्यमिक अर्थात प्राप्त प्राचीन माध्यमिक मध का शाल्ल है, और कालांतर में इसी से स्वतन्त्र एवं प्रासंगिक अलग-अलग दो मध मिले है, पर भी इसका सातारिक अभिप्राय प्रासंगिक ही रहा है, इसी प्रकार नागार्जुन का "मूल मध्यमक शाल्ल" की दोमें मध्यमिक का आधारभूत होने से मालुक वाली मूलभूत मध्यमक है। इस प्रकार मध्यवचन का साधारण निमित्त प्रयत्न एवं प्रचलनास्थ दों को विस्तार देना न मानता, निज-मा-पा की विशेषता है। अन्यथा मैत्रेय एवं नागार्जुन में से किसी के अवकाश होने का धस्य होगा। पवित्र वचन की बायाँ "उसके तत्तव" को भी साराव-पा एवं गेदु-पा विद्वान विज्ञानवादी शाल्ल मानते है। वर्तमान: इसमें अनेक एक गोष्ठ एवं एक ही बात का प्रतिपुन्यता होने से यह माध्यमिक मध का ही शाल्ल है।

इस प्रकार "अभिसमयवालकर" में शाबक प्रथाय बुद्ध के धर्म नैपराय ज्ञान न होने के एवं "क्षमास्मात्तात" में उनके धर्मिता स्वाम्य ज्ञान होने के पाया कहा गई है, उनमें भी विरोध नहीं है। मैत्रेय ने शाबक प्रथाय बुद्ध के अभिसमय यादी असाधारण कछुआर की दृष्टि से कहा और चक्रवीर्य प्रस्तुत तथ के
तात्विक असद्ध ज्ञान होने के आधार पर, इस प्रकार बतौर: उनमें विरोध नहीं है। युद्धम नेतृत्व ज्ञान के लिए दो निष्पक्षों का असद्ध ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। श्रीमती माया घट-पो-आज आदिरि निष्पक्षेठाता ज्ञान के लिए अनेक कारणों पूर्णपूर्ण नहीं है। उसी प्रकार अभिमत्वालकार, प्राप्ताम-मुलकार्क, मध्यमकार, मध्यमकारकार और उत्तरतः अनिवार्य शास्त्रों में ज्ञान, शक्ति, ज्ञान के ज्ञान एवं अनुभव, बोधित्व का समस्थ्रृभोन्न में समस्थ्रृभोन्न, दोनों आवश्यक की विपरीत, उनके खर्च, कारण और कारिर्ष के आधार पर व्यवस्था करता, वसूल अनुभव में, अर्थात श्रीवस्त्रथा में ज्ञान एवं पंचाशालक्त तथागतगर्भ का होना आदि शास्त्रों का अभिअप्राप्त परम्परा अविलुप्त माना जाता है।

यदि यह कहा जाय, कि तब स्वतात्त्विक एवंस्वरूपी माध्यमिक मत का बेद कैसे बना जायाम, तो उसका उद्देश्य यह समझना चाहिए-प्रतिजजयीपुर्वक परमात्मामार्थ का विशेष प्रतिपादन करते हुए माध्यमिक मत का आक्षण करने वालों को स्वतात्त्विक माध्यमिक एवं सभी प्रकार की प्रविष्टी के स्वतंत्रक हीकर अन्यायपारमार्थ का विशेष रूप से दर्शान करने वालों की प्रासंगिक माध्यमिक कही जाता है। इस प्रकार दोनों की दावाक मत के प्रतिपक्षों चित्र होते हुए भी अन्तिम रूप से दोनों की उपज में बंटी जाती नहीं है।ऐसा जानना चाहिए।

अनुवर्तन तन्त्र के आधार पर भेद

सामान्यतः यूरूपम से महत्व उल्लक्ष्य है, जैसे “विनय दीपिका” में कहा गया है कि “एक ही उद्देश्य होते हुए” भी
अर्योपोह, उपाय की अधिकता, सुलभ एवं तीव्र इन्द्रिय के आधार पर मन्नत उक्त होता है। इस प्रकार व्युत्पादनस्तरार, उसके आधार पर निरूपित धर्म एक ही साथ होते हुए भी दुःखों में बसता प्रतिपूर्ति एवं पास के प्रतिपादन में स्वाभाव रहता है। मन्नत की वह विशेषता है कि उसमें इस तरह का व्याख्या नहीं होता है। सुष्टु का परमार्थ, अनुमान प्रमाण का विवाह होने से बुद्धिमत्ता बत्तु है। स्नेह आदित्य आपके संविधान धर्म मात्र हेमोपायरिता के रूप में है जिसे ज्ञान जाते हैं। इस मार्ग के अनुसार उत्तममुद्धिता तीन्व असंस्कृत क्षणों में ही राज ग्राम का रूप है, मन्नत में ऐसा न होकर विना साधन हेतु ही अपेक्षा किए गई-विन्दु आदि के माध्यम मात्र से विना बुद्धिमत्ता निर्मितज्ञाप, निर्विकाय धर्मकार का साह निरूपित किया जाता है। यही अंतर्द्वित सब्जामज मंडल के रूप में ग्रामम में सिद्ध बसते तब तक का प्रतिपादन करते बिना संविधान ग्रामहेमोपायरिता के शुद्ध समस्त सत्य की अभिव्यक्ता का निरूपित करने में समर्थ होता है। उसी मार्ग के प्राथमिक पर उसमें पाक एक ही दिन में सुन्दर पत्र को प्राप दिया जा सकता है। उपाय अधिकता की दृष्टि से भी मन्नत अधिवेशन महत्व रक्षा बनता है। क्योंकि वह प्रेम एक रास के ज्ञान में भी साधारण रूप से ही जीवन में सुन्दर पत्र को तथा साधारण रूप से उपाय प्रतिपूर्ति को माहौल मार्ग के रूप में समर्थित करते अर्थात् बिना प्राप्तक के ही संस्कृतिकरण करने में समर्थ होता है। सुष्टु पत्र में इस प्रकार का उपाय नहीं होता है।

सुलभता की दृष्टि से भी मन्नत विविध होता है, क्योंकि मन्नत का मार्ग भी हेमोपायरिता रूप करोड़ आचारण के द्वारा समाधान करना है। मन्नत में से सब सहायक के रूप में समुहित होने एवं हेमोपायरिता की गुण्डता के कारण कामयाब होने के
आधार पर ही सिद्ध होता है। तीव्र इतिहास वाले के मार्ग होते से अलग प्रवास से ही वर्माजर्जी की प्रगति की जा सकती है। न केवल इस्तमाल चार विशेषताओं के आधार पर मनन 'सूचन' से विविध है अतिथि अच्छी राजनीति तन्त्र से मनन को नुसार की ओरेश भाग विशेषताओं विशेषताओं विविधता बताया गया है। इस प्रकार अतिविश्वसनीय मनन निर्देश को चार भागों में संग्रहीत किया जाता है। क्रियापरियोजना, चर्चापरियोजना, नीति उपयोग और अतिरिक्त इनमें से अनुपस्थित तन्त्र का जिन्हें विकास, अनुमोदन आदि के आधार पर मनन में सर-मा और महामाया इन दो रूपों में किया जाता है।

यह महान लोक-वा वैज्ञानिक, विज्ञान, कृपालार्थ, उपयोग विविध निविदाय तन्त्र, रिस-पैडरु-धार (विषय कोरिन) चल-छन-दुर्ल-पा (महानविद्वान निर्मितीक) खुद-छन-दिड-पा (महानविद्वान) जाने अत्यधिक मनन समिलत है। लोक-दे भुव (भ्रमित निकाय तन्त्र) जिसमें धार-वा दोडुप (संसार घुमस्त) रिन-पू-छं-रूड-रूड (देव घुमा तन्त्र) जा-जैल-मैद-पैड-रूड (क्रियाबाहुल्य तन्त्र) जाने एक लक्ष तन्त्र है। जो-छन-मन-रू-रूड (अतिव्योग) निर्मित तन्त्र से (देव घुमा तन्त्र) जय-देव-स्वयं (देव घुमा तन्त्र) जाने पद्ध जमार तन्त्र है। समस्त अतिव्योग तन्त्र नम-छ-छन-रूड (महानविद्वान छोट-स्वरूप-रूड-रूड (जीवनकल्प तन्त्र) जय-सेम-स्वरूप-रूड (अविश्वसनीय विद्वान तन्त्र) मन-देव-रूड-देव-रूड (आकाश घुमा तन्त्र) भी देव-स्वयं-पैड-रूड (देव तन्त्र) इसरूह परिणाम मुख्य निविदाओं का, मुख्य तन्त्र के बाह्य एवं आधारित तन्त्रों का भी उन-लोकों द्वारा कल्याण किया गया। आगम, अभीष्ट, उपदेश द्वारा अनुमोदन करने वाले परमरा
का है।

कालकृत न में प्रमुख श्री-जी-जी के विलेन संहत-पी (रत्नराम) आदि परम्परा लोगों का द्वारा मुख्य रूप से पिता ब्रह्मध्यसामाज, शान्तिस्मृति, दस महाकोष तथ स्वाभाविक प्रक्रियाएँ की आदि, तथा माहूलतन वनस्पतित के लिए आदि आदि आदि श्रृंखला मूलकश्य-मायाजाल, कालछक्क तथा आदि का अनुभव किया गया। उनके अनुष्ठान करने वालों को उत्तर अनुक्रमतिसे “सर-मा-पा” कहा जाता है।

सर-मा-पा वांती नीतितत्त्वाचून परम्परा के सदा विवाहों द्वारा अनुष्ठान उत्तर तत्त्वाचून में भी तीन भालो, इनके में भी तीनवसी भूमि से उपर की भूमिया उक्कड होती है। उत्तर आदि तथा भी आदि सार नीती भे होते हैं आदि मातृ-पितृ और आदि। इन तीनों में से आदि आदि तथा त्रिज्ञाता सभी तन्त्रों में परसोकृत गता जाती है। अतः् आदि पंत-सर-मा-पा वांती आदि अद्वयतन विकाय के सारकृत, विप्रदेश वेदज्ञान राज, मायाज्ञानात्मक में प्रमुख उपस्थित परमात्मा एवं भक्तिता उपाय पर आधिकारिक योग के आधार पर प्रथमतत्त्व अनुप्रेषण आदि द्वारा वालतत्विक आदि का साधारणत्तक करते का विभाग है। और हैं के दृष्टिकोण भाषा अभिप्रेक्षक के प्रमुख अनुप्रेषण है। इसलिए उन तन्त्रों को अनुप्रेषण सहृद तात्त्व ही मानना अधितत्त्व। कालप्रक्रिया में भी उपाय का आधार परमात्मण के आधार पर चार-आठ और सोळ कोणों के द्वारा सुधारों आदि अनुभव किया जाता है और उसके द्वारा श्रीमण्डलत्त्वन का साधत्ताक होता है। इस प्रकार आदि श्रीमण्डलत्त्व “सर-मा-पा” चौपा मुख्य रूप से दृष्टिकोण अभिप्रेक्षक का अनुप्रेषण करते हैं।

“सिद्धांत-पा” के आदि पंत-सर-पा में चीरे अभिप्रेक्षक विशेष रूप से विभाग जाता है, इसमें व्युत्प मृत्युपालन भव एवं भवन्तर सभी धर्म स्वभावितप्रत्यक्षात्मा, प्रृत्तिमृत्युपालनसम्मोह
काय, अभिभूत आभासमान निमाण काय का आदि से यथावत्
अनुभव किया जाता है और अनान्यभीक चार आक्षेप सीमाएँ
तक पहुँचाने वाले अतिकान्त मार्गों की भवना की जाती है।
चारिकविविधिनिशेध एवं हेवोपादेय के बिना आचरण करते हुए
फल अनान्यभीक रूप से समायम समानान्त भूमि में अभी से स्थित
एवं परंपरा रहकर अद्वै भूमि प्राप्त रहकर अनुभोत होता है।
इस तरह अतिववेण तन्त्रों द्वरा कित की प्रकृति विकाय पंचजानालक्ष
आदित्य ब्रह्म अन्न की विधिनिषेध एवं उत्तर-अन्योह-के
बिना पूर्ण रूप से निरूपित किये जाने के कारण उसे सभी तन्त्र
विवाहों में राजा की तरह और समस्त उपदेशों का सार्वभौम
माना गया है। इस बुद्धि से 481 वें 88वें आठ वातां मार्ग के
सोपान मार्ग के अतिरिक्त नीचे के उन यानों में पूर्ववत उपाध
एवं निर्ष्ट मार्ग का प्रति पाइन नहीं होता है।
सामान्यतः निग्र-मा के नी यानों की अवस्था अतिववेण
तन्त्रों के अभिव्यक्त से की गई है। यह भी अभिव्यक्तिन्यूत्त्रतन में-
नी कम बुद्धि के अनुसार है कहा गया है और तथा-सुधा-सुधा,
(न्यूत्त्रतन) में भी - “इस प्रकार नी के आधार पर समूल
नी यान हो जाते हैं। समुदाय उत्तर, तपस्याविविधा, वशीकरण
उपायमान है” इत्यादि कहा गया है।
इस प्रकार सूचि, तन्त्रविभ की गभीर दिर्घियों का अलिम सार
यही अतिववेण दृष्ट्य है। उसे अभिभूत, उपदेश द्वारा अविनयत
रूप से अनुभूत करना “निग्र-मा-पा” का असाधारण हस्ताक्षर
अनुभूत है। अति-निग्र-मा-पा के दर्शन, भावना एवं चर्चा सभी
अन्य ज्ञात मार्गों में सूचनात्य है, ऐसा माना जाता है।
अतिववेण दर्शन एवं तात्त्वन की परम्परा तीन वा पांच
दिशाओं में प्रभावित थी, लेकिन उन महापुर्यु कुज-खैन-लोक-
छेन-रब-ज्ञम-पा में इन समस्त परियों की समस्तता विशेषता पड़ती है। उन्होंने अतिभोग तन्त्र निर्धारण, उनके व्याख्यात शास्त्रों एवं उनके अनन्त उपदेशों के सारांश के रूप में प्रमुख मन-इज़-जोद (उपदेश कोश) छोड़-इज़-जोद (धर्माधातुकोश) तस-तुग-जोद (तथ्यता कोश) महत्त्व पाते हुए कोषों की रचना की जिनकी "लोह-छेन-जोद-हुन" (लोह-छेन सासकोश) कहा जाता है। साथ ही अपने "गुहाव गर्भ तन्त्र" पर महाभाषा आदि अनेक प्रस्तुति की रचना की। उनके बाद, उनके शासनकाल के साक्षात शिखर कुन-छेन-सिन-मेद-लिंग-पा एवं रिज-जिन-नाल-वई-बुगु आदि महान सिद्ध पुरुषों ने उनके जन प्रकाश को चारों ओर फैलाया। जिनकी परमप्रणाल सक तक अतिन्द्रिय रूप में स्वतंत्र आ गई है।

इस प्रकार उन महापुरुषों के आश्रयों के अनुसार हमें यह वक्तु कुछ बातें आपके समाम प्रस्तुत की है, जिससे प्राप्त कुछ कृतियों को पदार्थ सम्पन्न हैं तक के रूप में हम परिणामम के रूप में प्रतिष्ठान करते हैं।

सर्वभौतिकम्